वुज़ू से मुतअल्लिक़ चंद मुफीद चीज़ें के जिस से वुज़ु सही ओर सुन्नत के मुताबिक़ हो जाऐ इस मज्मूऐ मे शामिल की हे ताके खास तौर पर अवाम इसे पढ़ कर अपना वुज़ु सही करने की फिक्र करें। अल्लाह पाक से दुआ हे की इसे अपने लिये खालिस फरमा लें ओर क़बूल फरमा लें ओर हम सब मुसलमानों को अपना अपना वुज़ू सुन्नत के मुताबिक़ करने की तौफीक़ अता फरमाऐ। आमीन

30/10/2020 ई. 14/04/1442 हि. पीर

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
वुज़ू का अषर
हज़रत अबू हुरैरह र.अ. से रिवायत हे के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया : मेरे उम्मती क़ियामत के दिन बुलाऐ जाऐंगे तो वुज़ू के अषर की वजह से उन के चेहरे ओर हाथ पैर मुनव्वर ओर चमकदार होंगे, तो तुम मे से जो अपनी चमक बण्हाना चाहे तो ऐसा कर लें।
(सहीहे बुख़ारी)
सहीह वुज़ू का अषर इस दुनिया मे तो ये होता हे के चेहरे ओर हाथ पैर की धुलाई ओर सफाई हो जाती हे ओर बदन से गुनाह झड़ जाते हें, ओर अल्लाह के ख़ास बंदों को खास तरह की रूहानी नशात की कैफियत ह़ासिल होती हे, लेकिन क़ियामत मे वुज़ू का ऐक अजीब अषर ये भी ज़ाहिर होगा जैसा के रसूले करीम ﷺ ने इस हदीष मे बयान फरमाया हे के वुज़ू करने वाले आप ﷺ के उम्मतियों के चेहरे ओर हाथ पैर वहां खूब रोशन ओर चमकदार होंगे, ये उन की खास निशानी होगी। फिर जिस का वुज़ू जितना कामिल ओर मुकम्मल होगा उस की ये नूरानियत ओर चमक भी उसी दरजे की होगी, जिस की शकल ये हे के वुज़ू हमेंशा ध्यान ओर एहतेमाम से मुकम्मल करें ओर सुन्नतों ओर आदाब की पाबंदी करें।
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल् ह़क़ हनफी ब्यारवी

वुज़ू के फराइज़

1 ऐक मर्तबह पूरा चेहरा धोना।

यअनी लंबाई मे पेशानी के बालों से लेकर थोड़ी के निचे तक ओर चौड़ाई मे ऐक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक ऐक बार पूरा चेहरा धोना फर्ज़ हे।

2 ऐक मर्तबह दोनों हाथ कोहनियों के साथ धोना।

3 ऐक मर्तबह चोथाई सर का मसह़ करना।

यअनी पूरे सर के चार हिस्से किये जाऐं तो जितनी मिक़्दार ऐक हिस्से की होगी उतने हिस्से पर मसह़ करना फर्ज़ हे।

4 ऐक ऐक मर्तबह दोनों पैर टख़्नों के साथ धोना।

(दुर्रे मुख़्तार)

بسم الله الرحمن الرحيم

वुज़ू की सुन्नतें

वुज़ू की पंद्रह सुन्नतें हैं।

1 वुज़ू की निय्यत करना।

यअनी सिर्फ मुंह, हाथ साफ करने की निय्यत न हो, बल्के वुज़ू के जरिये षवाब ओर अल्लाह की खुशनुदी हासिल करने ओर इबादत के सहीह होने की निय्यत से वुज़ू करें।

2 बिस्मिल्लाह केहना।

यअनी بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ कर वुज़ू शुरू करें; बअज़ रिवायात मे वुज़ू से पेहले की ये दुआ भी आई हे।

بِسۡمِ اللّٰهِ الۡعَظِيۡمِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيۡنِ الۡاِسۡلَامِ ط

3 पेहले दोनों हाथों को गट्टों तक धोना।

4 मिस्वाक करना।

मिस्वाक करने का तरीक़ा ये हे के मिस्वाक दाहने हाथ की उंगलियों ओर अंगूठे के पोरों से इस तरह पकड़े के अंगूठा अगले हिस्से यानी ब्रश वाले हिस्से की तरफ ओर छुंग्ली (छोटी उंग्ली) पिछले हिस्से की तरफ मिस्वाक के नीचे रहे ओर बाकी उंगलियां उपर की तरफ रहे। ओर पेहले उपर के दांतों मे दाहनी तरफ मिस्वाक करें फिर बाईं तरफ, फिर नीचे के दांतों मे दाहनी तरफ मिस्वाक करें फिर बाईं तरफ करें। ओर ऐक बार कर लेने के बाद मिस्वाक मुंह से निकाल कर निचोड़ लें ओर नये सिरे से पानी से भिगो कर फिर करें, इस तरह कम से कम तीन मर्तबह करें। उस के बाद मिस्वाक को धो कर जेब मे या दीवार वगैरह से खड़ा कर के रख दें, वेसे ही ज़मीन पर न रखें।

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

मिस्वाक किस तरह की होनी चाहिये :

मिस्वाक ऐसी ख़ुश्क ओर सख्त लकड़ी की नहीं होनी चाहिये जो दांतों को नुक़सान पोहचाऐ ओर न ऐसी नर्म के मैल को साफ न कर सके; बल्के दरमियानी दरजे की होनी चाहिये, न ज़ियादह सख्त न ज़ियादह नर्म। ओर ज़हरीले दरख्त की भी नहीं होनी चाहिये, पीलु, ज़ैतून या किसी कड़वे दरख्त की हो तो बेहतर हे।

मिस्वाक की लंबाई :

लंबाई मे मिस्वाक ऐक बालिश्त (वेंत) होनी चाहिये, इस्तेअमाल करते करते कम हो जाऐ तो कोई ह़रज नहीं ओर जब पकड़ने के क़ाबिल न रहे तो बदल लेनी चाहिये; ओर मोटाई मे उंग्ली के बराबर होनी चाहिये, ओर सीधी हो गिरहदार (गांठ वाली) न हो; अगर मिस्वाक न हो या दांत न हो तो उंग्ली या कपड़े से मिस्वाक का काम लेना चाहिये।

5 कुल्ली करना।

कुल्ली तीन मर्तबह करें, हर बार नया पानी लें, मुंह भर कर करें, अगर रोज़ह न हो तो ग़रग़रा भी करें ताके ह़लक़ तक पानी पहोंच जाऐ।

6 नाक मे पानी डालना।

नाक मे तीन मर्तबह पानी डालें, हर बार नया पानी लें, अगर रोज़ह न हो तो इतना मुबालग़ा करे के नथनों की जड़ तक पानी पहोंच जाए।

7 दाढ़ी का ख़िलाल करना।

खिलाल करने का तरीका ये हे के दाहने हाथ के चुल्लू मे पानी ले कर थोड़ी के नीचे के बालों की जड़ों मे डालें, ओर हाथ की पुश्त गरदन की तरफ कर के उंगलियां बालों मे डाल कर नीचे से उपर की जानिब ले जाऐं। लेकिन ऐहराम की हालत मे खिलाल न करे क्यूंके बाल टूटने का अंदेशा हे जो ऐहराम मे मना हे।

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

8 चेहरे को पेशानी की तरफ से ओर हाथ पैर को उंग्लियों की तरफ से धोना।

9 उंग्लियों का ख़िलाल करना।

(अ) हाथ की उंग्लियों के खिलाल करने का तरीक़ा ये हे के ऐक हाथ की हथेली को दूसरे हाथ की पूश्त पर रख कर उपर के हाथ की तर (भीगी हुई) उंगलियों को नीचे के हाथ की उंगलियों मे डाल कर खींच लें।
(ब) पैर की उंगलियों के खिलाल करने का तरीक़ा ये हे के बाऐं हाथ की छोटी उँगली से इस तरह ख़िलाल करे के दाऐं पैर की छोटी उंग्ली से शुरू करें ओर बाऐं पैर की छोटी उंग्ली पर खत्म करें।

10 ऐक मर्तबह पूरे सर का मसह़ करना।

सर पर मसह़ करने का आसान तरीक़ा ये हे के उंगलियों ओर हथेलियों के साथ दोनों हाथ पानी मे तर कर के सर के आगे के हिस्से पर रख कर इस तरह पीछे की तरफ ले जाऐ के पूरे सर का मसह़ हो जाऐ।

11 कानों का मसह़ करना।

कानों के मसह़ का तरीक़ा ये हे के सर का मसह़ करने के बाद दोनों हाथों की शहादत की उंगलियों को कानों के सूराख़ ओर अंदर के हिस्से मे अच्छी तरह घुमाऐं ओर अंगूठों से कानों की पुश्त पर मसह़ करें। कानों के मसह़ के लिये नये सिरे से हाथ तर करने की जरूरत नहीं हे बल्के सर के मसह़ के लिये जो हाथ तर किये थे वही इस के लिये भी काफी हे, लेकिन अगर सर के मसह़ के बाद इमामे, टोपी या ओर किसी ऐसी चीज़ को छुआ हे जिस से हाथों की तरी जाती रही तो फिर दोबारा हाथ तर करें।

12 हर उज़्व को तीन मर्तबह धोना।

यअनी हर वो उज़्व जो वुज़ू मे धोया जाता हे जैसे चेहरा, हाथ ओर पैर उन को तीन तीन मर्तबह इस तरह धोना चाहिये के हर मर्तबह पूरा पूरा धुल जाए। लेकिन मसह़ सिर्फ ऐक मर्तबह करें।

13 तरतीब से वुज़ू करना।

वुज़ू उसी तरतीब से करना चाहिये जिस तरतीब से क़ुर्आन व हदीष मे आया हे, यानी पेहले निय्यत करना, फिर बिस्मिल्लाह पढ़ना, फिर गट्टों तक हाथ धोना, फिर मिस्वाक करना, फिर कुल्ली करना, फिर नाक मे पानी डालना, फिर चेहरा धोना, फिर दाढ़ी का ख़िलाल करना, फिर हाथ धोना, फिर उंगलियों का ख़िलाल करना, फिर मसह करना, फिर पैर धोना, फिर पैर की उंगलियों का ख़िलाल करना।

14 पै दर पै वुज़ू करना।

यअनी वुज़ू का अमल लगातार करें, ऐक उज़्व धोने के बाद दूसरा उज़्व धोने मे इतनी देर न करें के पेहला उज़्व सूख जाए; बल्के पेहले उज़्व के सूखने से पेहले ही दूसरा उज़्व धो लें। हां अगर मजबूरी हो तो कोई ह़र्ज नहीं।

15 वुज़ू के आअजा को मल मल कर धोना।

यअनी वुज़ू मे बदन के जो आअजा ओर हिस्से धोऐ जाते हें उन को खूब मल कर रगड़ कर धोऐं खास कर के सर्दियों के ज़माने मे इस का ज़ियादह खयाल रख्खें क्यूंके खुश्की की वजह से बदन के कुछ हिस्से के सुखा रेह जाने का ज़ियादह अंदेशा हे।

(दुर्रे मुख़तार मअ शामी, फतावा हिन्दिय्यह,)

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
वुज़ू के मुस्तह़ब्बात
वुज़ू मे चौदह मुस्तह़ब्बात हें।
1 पाक ओर ऊंची जगह पर बैठ कर वुज़ू करना।
वुज़ू के लिये नापाक या ऐसी जगह पर न बैठे के इस्तेअमाल किया हुवा पानी या नापाकी बदन या कपड़ों पर उड़े।
2 वुज़ू करते वक़्त क़िब्ले की तरह मुंह कर के बैठना।
3 वुज़ू का बरतन मिट्टी का होना।
4 वुज़ू के अमल मे किसी से मदद न लेना।
यअनी अपना चेहरा,हाथ ओर पैर वगैरह किसी दूसरे शख्स से न धुलवाऐं, बल्के खुद ही धोऐं। ओर अगर दूसरा शख्स सिर्फ पानी डाल रहा हो ओर अअजा आप खूद ही धोऐं तो कोई हर्ज नहीं। इसी तरह बीमारी ओर मजबूरी की वजह से किसी ओर से धुलवाऐं तो भी हर्ज नहीं।
5 वुज़ू के अअजा को जहां तक धोना फर्ज़ हे उस से ज़ियादह धोना।
6 दाऐं हाथ से कुल्ली करना ओर दाऐं हाथ से नाक मे पानी डालना।
7 बाऐं हाथ से नाक साफ करना।
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी व्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم

8 अंगूठी, चुड़ियां वगैरह अगर ऐसी हो के बदन तक पानी पहोंचने मे रुकावट न बनती हो तो उन को हिलाना।

9 कानों का मसह़ करते वक़्त छोटी ऊंग्ली कानो के सुराख मे डालना।

10 पैर धोते वक़्त दाऐं हाथ से पानी डालना ओर बाऐं हाथ से मलना।

11 ठंडी के मौसम मे हाथ पैर को पेहले भीगे हुवे हाथ से मलना ताके अअजा पर धोते वक़्त पानी आसानी से पहोंच जाऐ।

12 हर उज़्व को धोते वक़्त बिस्मिल्लाह ओर कलिमऐ शहादत पढ़ना।

13 वुज़ू के दरमियान की ओर वुज़ू के बाद की जो दुआऐं हदीष शरीफ मे आई हे उन को पढ़ना।

14 वुज़ू के बचे हुवे पानी को ख़डे हो कर पीना।

(दुर्रे मुख़तार मअ शामी, फतावा हिन्दिय्यह, इल्मुल् फिक़्ह)

@AaajkeeTaaleem

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
वुज़ू के मकरूहात
वुज़ू के नौ मकरूहात हें।
1 जो चीज़ें वुज़ू मे मुस्तहब हें उन के ख़िलाफ करना।
2 पानी ज़रूरत से ज़ियादह ख़र्च करना।
3 पानी इतना कम ख़र्च करना के जैसे आप तेल मालिश करते हें।
4 वुज़ू करते हुवे बग़ैर उज़्र के दुनिया की बात करना।
5 वुज़ू मे वुज़ू के अअज़ा के अलावह दूसरे अअज़ा को बग़ैर ज़रूरत के धोना।
6 मुंह ओर दूसरे अअज़ा को धोते वक़्त ज़ोर से पानी मारना।
7 अअज़ा को तीन मर्तबह से ज़ियादह धोना।
8 नऐ पानी से तीन मर्तबह मसह़ करना।
9 वुज़ू के बाद हाथों का पानी झटकना।
(इल्मुल् फिक़्ह, दुर्रे मुख़तार मअ शामी, फतावा हिन्दिय्यह)
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم

वुज़ू का तरीक़ा

जब आप वुज़ू करना चाहें तो दिल ही दिल मे निय्यत करें के में अल्लाह की खुशनुदी ओर पाकी हासिल करने के लिये वुज़ू करता हूं, फिर वुज़ू के लिये किसी पाक ओर ऊंची जगह पर बैठ जाऐं ताके गंदगी या इस्तेमाल होने वाला पानी बदन या कपड़ो पर न लगे ओर वुज़ू करते वक़्त बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम पढ़ें,

ओर फिर तीन मर्तबह दोनों हाथ गट्टों तक धोऐं, फिर दाऐं हाथ से तीन मर्तबह कुल्ली करें, ओर मिस्वाक करें, मिस्वाक न हो तो किसी मोटे कपड़े या सिर्फ उंगली से दांत साफ करें, ओर अगर रोज़ह न हो तो ग़रग़रा कर के खूब अच्छी तरह पानी पूरे मुंह मे पोंहचाऐ, रोज़ह हो तो ग़रग़रा न करें।

फिर दाऐं हाथ से तीन मर्तबह नाक मे पानी डालें ओर बाऐं हाथ से नाक साफ करें, ओर कोशिश करें के नथनों की जड़ तक पानी पहोंच जाऐ, लेकिन अगर रोज़ह हो तो नरम नरम हिस्से से ऊपर पानी न ले जाऐ।

फिर तीन मर्तबह पूरा चेहरा धोऐं इस तरह के पेशानी के बालों से थोड़ी के नीचे तक ओर ऐक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक सब जगह पानी बेह जाऐ, दोनों अबरूओं के नीचे भी पानी पोंहचाऐ के सुखा न रेह जाऐ।

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी व्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم

फिर तीन मर्तबह दाहना हाथ कोहनियों के ऊपर तक धोऐं, इस तरह के उंग्लियों की तरफ से धोते हुवे कोहनियों तक जाऐं, फिर इसी तरह बाऐं हाथ को धोऐं, ओर ऐक हाथ की उंग्लियों को दूसरे हाथ की उंग्लियों मे डाल कर ख़िलाल करें, अंगूठी पेहनी हुई हों या ओरतों ने छल्ले पेहने हुवे हों तो उन को हिलाऐं ताके कोई जगह सूखी न रेह जाऐ।

फिर ऐक मर्तबह पूरे सर का मसह़ करें। फिर दोनों कानों का मसह़ करें, कानों के अंदर का मसह़ शहादत की उंगलियों से ओर कानों के बाहर का मसह़ अंगूठों से करें। फिर उंग्लियों की पुश्त से गरदन का मसह़ करें लेकिन गले का मसह़ न करें क्यूं के ये मना हे, ओर कानों के मसह़ के लिये नये पानी की जरूरत नहीं हे सर के मसह़ के लिये हाथ तर किया था वही काफी हे।

फिर दाहना पैर टख़्नों के उपर तक तीन मर्तबह धोऐं, फिर इसी तर बाऐं पैर को धोऐं, पैर धोते हुवे दाऐं हाथ से पानी डालें ओर बाऐं हाथ से पैर मले। फिर बाऐं हाथ की छोटी उंग्ली से पैरों की उंग्लियों का इस तरह खिलाल करें के दाऐं पैर की छोटी उंग्ली से शुरू करें ओर बाऐं पैर की छोटी उंग्ली पर खत्म करें।

फिर वुज़ू मुकम्मल होने पर आसमान की तरफ मुंह कर के कलिमऐ शहादत पढ़ें, ओर वुज़ू के बाद की दुआ भी पढ़ें।

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
नवाक़िज़े वुज़ू
मज्मूई तौर पर इन आठ चीज़ों से वुज़ू टूट जाता हे
1 आगे या पीछे की शर्मगाह से किसी चीज़ के आदत के तौर पर निकलने से।
(मषलन पेशाब, पाख़ाना, हवा, मनी, मज़ी वगैरह)
2 आगे या पीछे की शर्मगाह से किसी चीज़ के ख़िलाफे आदत निकलने से।
(मषलन इस्तिहाज़ा का ख़ून, कीड़ा, कंकरी वगैरह)
3 बदन के किसी ह़िस्से से नजासत के निकलने से।
(मषलन ख़ून, पीप, मवाद या बिमारी की वजह से नापाक पानी निकलने से)
4 मुंह भर कर उल्टी से।
5 नींद से।
(जिस से बदन के अअज़ा ढीले पड़ जाऐं)
6 बेहोशी, पागलपन ओर नशे से।
7 रुकू सजदे वाली नमाज़ मे क़हक़हा लगा कर हंसने से।
8 मुबाशरते फाह़िशह से।
(यअनी बगैर किसी रुकावट के शर्मगाह को शर्मगाह से मिलाने से, चाहे मर्द का ओरत से, या मर्द का मर्द से, या ओरत का ओरत से)
(अज़ : किताबुल् मसाइल)
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
वुज़ू की दुआऐं
वुज़ू शुरू करने से पेहले ये दुआ पढ़ें
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
शुरू मे ये दुआ भी पढ़ सकते हें, मन्क़ूल हे
بِسْمِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ۔
(बिस्मिल्लाहिल् अज़ीमि, वल्ह़म्दु लिल्लाहि अला दीनिल् इस्लामि)
गट्टों तक हाथ धोते वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْيُمْنَ وَالْبَرَكَةَ،
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشُّوْمِ وَالْهَلَاكَةِ۔
(अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् युम्न वल्बरकत,
व अऊज़ु बिक मिनश् शूमि वल्हलाकति)
कुल्ली के वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰى تِلَاوَةِ الْقُرْاٰنِ،
وَذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ۔
(अल्लाहुम्म अइन्नी अला तिलावतिल् क़ुर्आनि,
व ज़िक्रिक, व शुक्रिक, व ह़ुस्नि इबादतिक)
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
नाक मे पानी डालते वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ اَرِحْنِیْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ ، وَلَا تُرِحْنِیْ رَائِحَةَ النَّارِ۔
(अल्लाहुम्म अरिह़्नी राइह़तल् जन्नति, व ला तुरिह़्नी राइह़तन् नारि)
चेहरा धोते वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ بَیِّضْ وَجْهِیْ یَوْمَ تَبْیَضُّ وُجُوْهٌ وَّ تَسْوَدُّ وُجُوْهٌ۔
(अल्लाहुम्म बय्यिज़ वज्ही यव्म तब्यज़्ज़ु वुजूहुन् व तस्वद्दु वुजूहुन)
दाहना हाथ धोते वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ كِتَابِیْ بِیَمِیْنِیْ ، وَ حَاسِبْنِیْ حِسَابًا یَّسِیْرًا۔
(अल्लाहुम्म अअ़्तिनी किताबी बियमीनी, व ह़ासिब्नी ह़िसाबन् यसीरा)
बायां हाथ धोते वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ لَا تُعْطِنِیْ كِتَابِیْ بِشِمَالِیْ ، وَ لَا مِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِیْ۔
(अल्लाहुम्म ला तुअ़्तिनी किताबी बिशिमाली, व ला मिन् वराइ ज़हरी)
सर का मसह़ करते वक़्त पढ़ें
اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِیْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ یَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ۔
(अल्लाहुम्म अज़िल्लनी तह़्त ज़िल्लि अर्शिक यव्म ला ज़िल्ल इल्ला ज़िल्लु अर्शिक)
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी व्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم

कानों का मसह़ करते वक़्त पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۔

(अल्लाहुम्मज् अल्नी मिनल्लज़ीन यत्तबिऊनल् क़व्ल फयत्तबिऊन अह़्सनहू)

गरदन का मसह़ करते वक़्त पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اَعْتِقْ رَقَبَتِىْ مِنَ النَّارِ ۔

(अल्लाहुम्म अअतिक़् रक़बती मिनन्नारि)

दाहना पैर धोते वक़्त पढ़ें

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمَىَّ عَلَى الصِّرَاطِ يَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامُ ۔

(अल्लाहुम्म षब्बित् क़दमय्य अलस़्सिराति यव्म तज़िल्लुल् अक़्दामि)

बायां पैर धोते वक़्त पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ ذَنْبِىْ مَغْفُوْرًا ، وَ سَعْيِيْ مَشْكُوْرًا ، وَتِجَارَتِيْ لَنْ تَبُوْرَ ۔

(अल्लाहुम्मज़्अल् ज़म्बी मग़्फूरन्, व सअयी मश्कूरन्, व तिजारती लन् तबूर)

@AaajkeeTaaleem

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم

वुज़ू के बाद आसमान की तरह मुंह कर के पढ़ें

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ،
وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ ـ

(अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू)

हदीषे पाक मे हे के जो बंदा अच्छी तरह वुज़ू कर के ये दुआ पढ़ता हे तो उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाएंगे जिस से चाहे दाख़िल हो जाए।

फिर ये दुआ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ـ

(अल्लाहुम्मज्अल्नी मिनत्तव्वाबीन वज्अल्नी मिनल् मुतत़ह्हिरीन)

ओर ये भी पढ़ लें

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ،
اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ ـ

(सुब्ह़ानकल्लाहुम्म व बिह़म्दिक, अश्हदु अल्ला इलाह इल्ला अन्त, अस्तग़्फिरुक व अतूबु इलय्क)

@AaajkeeTaaleem

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

(अल्लाहुम्मग़्फिर्ली ज़म्बी, व वस्सिअ ली फी दारी, व बारिक ली फी रिज़्क़ी)

(माख़ूज़ अज़ : रद्दुल् मुहतार, फतावा हिन्दिय्यह)

● ● ●

इन दुआओं को आसानी के साथ अमल मे लाने के लिये पेहले ऐक दुआ याद कर लें ओर उस की आदत बना लें फिर दूसरी दुआ याद करें ओर उस की आदत बना लें... इसी तरह सब दुआऐं याद कर लें ओर पूरे ऐहतिमाम से वुज़ू करें, चंद मर्तबह करने के बाद इन्शा अल्लाह आदत बन जाऐगी। ओर अगर किसी से सब दुआऐं याद न हो सके तो कम से कम वुज़ू के शुरू की, दरमियान की ओर आखिर की दुआऐं तो याद कर के आदत बना ही लेना चाहिये। बहोत फाइदहमंद हे।

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
वुज़ू की क़िस्में
वुज़ू की चार क़िस्में हें।
1 फर्ज़
दो सूरतों मे वुज़ू फर्ज़ हे।
1 हर नमाज़ के लिये
(चाहे नमाज़ फर्ज़ हो या वाजिब या सुन्नत या नफल ओर चाहे जनाज़े की नमाज़ हो)
2 सजदऐ तिलावत के लिये
2 वाजिब
दो सूरतों मे वुज़ू वाजिब हे।
1 काअबा का तवाफ करने के लिये
2 क़ुर्आने करीम छूने के लिये
3 सुन्नत
दो सूरतों मे वुज़ू सुन्नत हे।
1 सोने से पेहले
2 ग़ुस्ल से पेहले
4 मुस्तह़ब
इन सूरतों मे वुज़ू मुस्तह़ब हे।
1 अज़ान ओर तकबीर के वक़्त
2 ख़ुत्बा पढ़ते वक़्त (चाहे ख़ुत्बा जुमुआ का हो या निकाह का हो या ओर कोई)
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी ब्यारवी

بسم الله الرحمن الرحيم
3 दीन का इल्म पढ़ते या पढ़ाते वक़्त
4 दीन की किताबें छूते वक़्त
5 सलाम करते वक़्त या सलाम का जवाब देते वक़्त
6 अल्लाह तआला का ज़िक्र करते वक़्त
7 सो कर उठने के बाद
8 ऊंट का गोश्त खाने के बाद
9 मय्यित को ग़ुस्ल देने के बाद
10 जनाज़ह उठाने के बाद
11 हर वक़्त बावुज़ू रेहने के लिये
12 नबीऐ करीम ﷺ की ज़ियारत के लिये
13 अरफात मे ठहेरने के लिये
14 सफा मरवह की सई के लिये
15 जुनूबी (नापाक) शख्स को ग़ुस्ल से पेहले खाने के लिये
16 अपनी बीवी से ख्वाहिश पूरी करने से पेहले
17 उन हालतों मे जिन मे हमारे इमाम के नज़दीक वुज़ू नहीं जाता मगर दूसरे इमामों के नज़दीक जाता रेहता हे
18 हैज़ या निफास वाली ओरत को नमाज़ के वक़्त सिर्फ वुज़ू करना
(दुर्रे मुख़तार मअ शामी)
मुस्तहब की ये चंद सूरतें लिख्खी गई हें, इस के अलावा ओर भी सूरतें किताबों मे मजकूर हे।
@AaajkeeTaaleem
मुफ्ती असरारुल हक़ हनफी ब्यारवी